ऐश्वर्य और अहंकार के साथ मिलन संभव नहीं

कई लोग परमात्मा से मिलन मनाने के लिए जप-तप, दान-पुण्य, उपवास व व्रत रखते हैं। ये सब इसीलिए है कि हमारा भगवान से मिलन हो, वो हमारी सुन ले। मुझे भगवान से ये प्राप्ति हो जाए। आपकी भावना तो अच्छी है, पर ये संभव कैसे हो, उसका विधि-विधान क्या है, क्या यही है जो हम कर रहे हैं? क्या इससे हम मिलन मना पा रहे हैं या मिलन होगा? ये बहुत बड़ा प्रश्न है। हम इस तरह से सोचें कि ये सब करते हुए हमारा मिलन तो हो नहीं रहा है, फिर हम ये सब क्यों कर रहे हैं!

गीता में भगवानुवाच है, 'यज्ञ, तप, जप, पूजा पाठ से मैं प्राप्त नहीं होता हूँ।' तो इस अनुसार तो भगवान मिलना नहीं है, न ही भगवान से मिलन होना है। फिर ये सब करने का क्या मतलब है? अब हम कहेंगे कि आप स्वयं देखें, कि क्या ऐसा तरीका है जिससे कि हमारा भगवान से मिलन हो। ये बात हम यहाँ रोकते हैं। इसके लिए एक कहानी हम आपके सामने रखते हैं जिससे आपको इस गुत्थी को समझने में मदद मिलेगी।

विश्व विख्यात सूफी संत मियां मीर से मिलने के लिए एक बादशाह उसकी कुटिया के पास पहुंचा। कुटीर के बाहर एक फकीर खड़ा था। उस फकीर को बादशाह ने सत्ता के नशे में आवाज़ से कहा, 'हम संत से मिलना चाहते हैं। आप उन्हें जाकर खबर दो कि खुद बादशाह आपका दर्शन करने के लिए पधारे हैं।'

सूफी संत को पूछने के लिए फकीर अंदर गया। तब संत ने उससे सवाल किया, 'बादशाह किस रीति से आया है? उसके साथ और कोई है?'

फकीर ने कहा, 'बादशाह तो लाव लशकर सहित आया है। साथ में ऊँट पर हीरे जवाहरात भी लाद कर आया है। मुझे लगता है कि वो हीरे जवाहरात आपको भेंट करना चाहता है।'

सूफी संत मियां मीर ने कहा, 'उससे कह दो कि वापस चला जाये। मेरे पास मिलने का समय नहीं है।'

कुटीर से बाहर आकर फकीर ने बादशाह से कहा, 'संत मीर आपसे मिलने की इच्छा नहीं रखते। इसलिए आप यहाँ से जाने की कृपा करें।'

बादशाह वापस चला गया : परंतु अपनी राजधानी में जाने के बदले सबकुछ त्याग कर फकीर बनकर उसी जंगल में एक कुटिया बनाकर रहने लगा और थोड़े समय के बाद फिर उस संत से मिलने के लिए गया। उसने बाहर बैठे हुए फकीर से कहा कि मियां मीर से कहो कि उनसे मिलने के लिए जिसने वर्चस्व का त्याग किया है, ऐसा फकीर आपसे मिलने के लिए आया है।

मियां मीर ने वापस उत्तर दिया कि वे उससे मिलने की इच्छा नहीं रखते। उसके लिए पहले रावी नदी के किनारे पर एक कुटिया में रहते वैरागी की सेवा करे, फिर मुझसे मिलने के लिए आये।

सूफी संत के कहने अनुसार बादशाह ने निरंतर दो वर्ष तक रात दिन वैरागी की सेवा की। उसके चेहरे पर झुर्रियां आ गईं। एक दिन वैरागी ने बादशाह से कहा, 'क्या आप संत मियां मीर से मिलना चाहते हो? तो जाओ, संत खुद आपको मिलने के लिए निमंत्रण दे रहे हैं। उनसे मिलकर आओ।'

सूफी संत मियां मीर की कुटिया में जाकर बादशाह ने पूछा, 'आपने मुझे दो बार मिलने बिना वापस जाने को कहा, इसका कारण क्या है?'

सूफी संत ने कहा, 'पहली बार आप आये तब बादशाही वैभव के साथ आये थे, और दूसरी बार आये तब बादशाही वैभव नहीं था, परंतु उसका अहंकार आपके चित्त में था। इसलिए दोनों बार आपको वापस जाना पड़ा। आपने उन दोनों को छोड़ दिया, इसीलिए अब मैंने आपको सामने से बुलाया।'

इस कहानी को गौर से पढ़ेंगे तो बात पकड़ में आयेगी और आपको समझ में आयेगा कि समस्या कहाँ है। अगर हमें भगवान से मिलना है तो हम उनके समकक्ष होकर ही मिल सकते हैं। हम परमात्मा से मिलने की मंसा लेकर तो जाते हैं, लेकिन कौन मिलेगा, कैसे मिलेगा, मिलने का मकसद क्या होगा, ये महत्वपूर्ण बात हमसे छूट जाती है। भगवान से मिलने के लिए न ऐश्वर्य और न ही अहंकार की ज़रूरत है। ये दोनों ही मुखौटा पहनकर यदि हम भगवान से मिलना चाहते हैं तो हमारा उनसे मिलन कतई नहीं हो सकता।

हम सर्वशक्तिवान परमेश्वर, उस सर्वोच्च से मिलना चाहते हैं, तो जो भी हमारे जीवन का दायरा है, जिसमें हम जी रहे हैं, उससे परे होकर ही मिलन मना सकेंगे। अन्यथा तो सिर्फ औपचारिकताएं ही होंगी, मिलन नहीं होगा और ना ही प्राप्ति होगी, ना ही तृप्ति होगी। तभी तो हम अपने अनुसार सबकुछ करते हुए मिलने की कोशिश करते हैं, लेकिन मिलन होता ही नहीं। इस लुप्त कड़ी को सही तरीके से समझ जाने पर ही मिलन होगा।

हम परमात्मा से प्यार करते हैं, वो भी हमसे प्यार करता है। वो हमारा माता पिता है। परमपिता भी चाहते हैं कि हम बच्चों से मिलें, और बच्चे भी चाहते हैं कि परमपिता से मिलें। किंतु उसके लिए दोनों का सही परिचय व दोनों के बीच शुद्ध व शुभ भावना का होना ज़रूरी है। आज हमने स्वार्थ और परवृत्ति की भावनाओं का पसेरा बनाया हुआ है कि हम अपने आप को भी सही रीति से नहीं जानते हैं और ना समझते हैं। तब भला परमपिता को जानना, उन्हें समझना तो दूर की बात हो जाती है।

तो आपको ये पढ़कर वो बात समझ में आ गई होगी कि हमें परमात्मा से मिलने के लिए क्या करना है और किस चीज़ की ज़रूरत है। हम उससे मिलने के लिए क्या क्या कर रहे हैं, उसका अंतर जान ही गये होंगे। ठीक है ना! परमात्म प्यार में शुद्धता और पवित्रता का होना सबसे पहले अनिवार्य है। तब ही हमारा उनसे मिलन संभव हो पायेगा।

भुवनेश्वर-ओडिशा। राजभवन में राज्यपाल महोदय गणेशी लाल जी ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत अभियान' के सदस्यों को सम्मानित करते हुए।

पौड़ी गढ़वाल-उत्तराखण्ड। राज्यपाल महोदया बेबी रानी मौर्य को शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शिविका,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. मेहरचंद,पंजाब।

भदोही-उ.प्र.। केन्द्रीय कपड़ा मंत्री स्मृति इरानी के ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शांति भवन में पहुंचने पर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी।

नेपाल-पोखरा। गण्डकी प्रदेश की सामाजिक विकास मंत्री माननीय नरदेवी पुन मगर के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. परणीता।

शिलॉन्ग-मेघालय। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि., शिलॉन्ग में छः दिवसीय कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में कॉर्पोरेशन स्टाफ के साथ ब्र.कु. समता, ब्र.कु. अमित तथा अन्य।

मोकामाघाट-बिहार। आर.पी.एफ. कैंट में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कमांडेंट वाय.के. मंडल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. अस्मिता, ब्र.कु. कमल तथा डॉ. दिनेश शर्मा।

सम्बलपुर-ओडिशा। 'एक ईश्वर-एक विश्व परिवार' विषय पर आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन के दौरान मंचासीन हैं माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. रामनाथ, ब्र.कु. पार्वती, स्वामिनी विष्णुप्रिया नन्दा, फादर आलफन्स टोप्पो, इमाम साहाबुद्दीन खान, सुरजीत सिंह तथा ब्र.कु. दीपा।

आबू रोड-किवरली। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सर्वोदय शिक्षण संस्थान में 'स्वास्थ्य एवं मूल्यनिष्ठ जीवन' विषय पर कार्यशाला के दौरान उपस्थित हैं ब्रह्माकुमारीज़ सोशल एक्टिविटीज़ ग्रुप के सदस्य ब्र.कु. नीतेश, ई.टी.पी. डिपार्टमेंट के ब्र.कु. ललित तथा शिक्षकगण।

पटना-खाजपुरा। सी.आई.एस.एफ. पटना के मुख्यालय में 'कार्य-व्यवहार में खुशनुमा जीवन जीने की कला तथा तनाव कैसे कम हो' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अंजू। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. पूनम, ब्र.कु. अंशु, ब्र.कु. दिलीप, सी.आई.एस.एफ. मुख्यालय के असिस्टेंट कमाण्डेंट, इंस्पेक्टर तथा अन्य।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। आर्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स द्वारा राज्य स्तरीय 'मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण शिविर' में राजयोगिनी ब्र.कु. वसुधा को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए उत्तर रेलवे के एडिशनल पर्सनल अधिकारी विनय कुमार,आई.ए.एस., हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स के राज्य सचिव नवीन जयसिंह, ए.एस.एस. स्कूल के प्राचार्य डॉ. प्रमेन्द्र चित्तौड़िया तथा अन्य।